चना की वैज्ञानिक खेती

राँची में 2015-16 में 6040 हे. क्षेत्र में सरसों की खेती की गयी। जिसकी उत्पादकता 1100 कि.ग्रा. प्रति हे. थी।

खेत की तैयारी : चने की अच्छी पैदावार के लिये खेत की एक बार गहरी जुताई मिट्टी पलट हल से करके दो जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करें। प्रत्येक जुताई पर पाटा मार दें जिससे खेत की नमी बनी रहे तथा मिट्टी भुरभुरी हो जाय। खेत को समतल करके जल निकास युक्त बनायें। ढेलेदार खेतों में चने की फसल ली जा सकती है।

बीज दर : चने की बीज दर आकार, बोआई की विधि व बोआई के समय पर निर्भर करती है। जैसे समय से बोआई करने पर छोटे दाने 70-80 किलो प्रति हेक्टेयर, मध्यम दाने 80-90 किलो प्रति हेक्टेयर तथा देर से बोआई करने पर बड़े दाने 90-100 किलो प्रति हेक्टेयर।

उर्वरक : प्रति हेक्टेयर 25 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर, 25 कि.ग्रा. पोटाश अर्थात 12 किलो यूरिया, 112 किलो डी.ए.पी. तथा 40 किलो एम.ओ.पी. खेत की तैयारी के समय मिला देना चाहिए साथ ही साथ 50 क्विं. गोबर की खाद या 20 क्विं. केंचुआ खाद आदि संभव हो तो देना चाहिए।

उन्नत प्रभेद : देशी : जी.एन.जी. 1581, एस.ए.आई.-9616, उदय (के.पी.जी.59), के.डब्लू.आर. 108, आई.सी.सी.सी. 37, पूसा 72, पूसा 256, बिरसा चना 3, पंतजी 114

काबली : काग 2, गुजरात चना, पूसा 1003, स्वेता तथा एच.के.94-134

बीज शोधन : चने की फसल को बीज जनित रोगों से बचाव के लिये बोने से पहले प्रति किलो बीजों को 1 ग्राम वीटावैक्स या वैविस्टीन 1 ग्राम या 1.5 ग्राम थीरप या 4ग्राम ट्राइकोडरमा से शोधित करें। दीमक से बचाव के लिये 6 मि.ली. क्लोरोपायरीफास 80 ई.सी. तरल को 50 मि.ली. पानी में घोल लें और इस घोल को 1 किलो बीज पर अच्छी तरह मिला कर छाये में सुखा दें। बीज शोधन करके दूसरे दिन बोआई करें।

बीजोपचार : चने की अच्छी पैदावार लेने के लिए शोधित चने में बीजों पर राइजोबियम कल्चर तथा पी.एस.बी. (फास्फो साल्वींग बैक्टीरिया) से उपचारित किया जाता है।

बोआई का सही समय : असिंचित अवस्था में चना की बोआई का उचित समय अक्टूबर माह का द्वितीय एवं तृतीय सप्ताह है। सिंचित अवस्था में चना की बोआई नवम्बर माह के द्वितीय सप्ताह तक कर देनी चाहिए।

बोआई की विधि : दो से तीन जुताई के बाद हल के पीछे कुड़ों में 30 सें.मी. के अन्तर पर 5 सें.मी. की गहराई में चने की बोआई करनी चाहिए। पौध से पौध की दूरी 8-10 सें.मी. रखते हैं।

सिंचाई : खेत में पर्याप्त नमी नहीं होने पर पलेटा देकर खेती की तैयारी करके बोआई करनी चाहिए, जिससे चने का जमाव अच्छा हो। यदि सिंचाई उपलब्ध हो तो फूल आने के पहले तथा दूसरी सिंचाई फलियों में दाना बनते समय करनी चाहिए। फूल आते समय सिंचाई नहीं करनी चाहिए।

खरपतवारी नियंत्रण : चने में खरपतवार नियंत्रण हेतु बोआई से 25 दिन पर पहली बार खुरपी से निकाई-गुड़ाई करें तथा दूसरी बार 50-60 दिन पर दूसरी निकाई-गुड़ाई करें। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए बोआई के बाद पेन्डीमिथलीन 30 ई.सी. सक्रिय तत्व की 1.0 किलोग्राम मात्रा को 500 लीटर पानी में घोल कर खेत में छिड़काव करें। ध्यान रहे रासायनिक खरपतवार नाशी के व्यवहार के समय खेत में नमी रहना जरूरी है।

कटाई : जब पौध की पत्तियाँ झड़ जायें या पीली पड़ने लगे अथवा हल्की भूरी हो जायें तब फसल की कटाई करनी चाहिए। फली से दाना निकालकर अच्छी तरह सुखा कर भण्डारण करना चाहिए। ऊपज क्षमता 15-20 क्विंटल दाना या 125-160 क्विं. हरी झंगड़ी प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है।

×××××